Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG. Sem - II
MJC - 7. Scientific Method

1. "अन्वय - विधि"
(The method of agreement) 1.

इस विधि के द्वारा कारण (Cause) से कार्य (effect) और कार्य से कारण का पता लगाया जा सकता है।

(1.) कारण से कार्य का पता लगाना — मान लीजिए कि हम मेहनत (labour) के नतीजे (effect) को जानना चाहते हैं। इसके लिए हम मेहनत के दो-तीन उदाहरणों को देखते हैं। जैसे — राम खेत में शारीरिक मेहनत करता है और इससे उसको सफलता मिलती है — अन्न औषध के रूप में। दूसरे उदाहरण में देखते हैं कि हरि पढ़ने में खूब मानसिक मेहनत करता है और इससे उसको सफलता मिलती है वह प्रथम श्रेणी में पास करता है तीसरे उदाहरण में देखते हैं कि जदु नौकरी में खूब मेहनत करता है इससे उसको सफलता मिलती है — वह प्रोन्नति (Promotion) पाता है — आदि-आदि। इस तरह मेहनत के विभिन्न उदाहरणों में सफलता नियमित रूप से देखी जाती है। इसलिए मेहनत का नतीजा का फल (effect) सफलता है।

एक अन्य उदाहरण में मान लीजिए कि हम वनस्पति घी का प्रभाव (effect) अपने स्वास्थ्य के ऊपर देखना चाहते हैं। इसके लिए वनस्पति घी की पूरी खाते हैं और अपच हो जाता है। वनस्पति घी की मीठाई खाते हैं

MAY 2013
WK MO TU WE TH FR SA SU
18 1 2 3 4 5
19 6 7 8 9 10 11 12
20 13 14 15 16 17 18 19
21 20 21 22 23 24 25 26
22 27 28 29 30 31

कोई पेट में दर्द हो जाता
है वनस्पति घी की जलन बढ़ाते हैं
और पेट में जलन हो जाती है।
इस तरह, आपने स्वास्थ्य पर
वनस्पति घी के हानिकारक प्रभाव
(effect) का पता चल जाता है।

(2) कार्य से कारण का पता लगाना

(क) यदि कोई व्यक्ति जब कभी ठंड पड़ती है, गठिया-वात से पीड़ित हो जाता है तब हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ठंड का पड़ना गठिया-वात होने का एक आवश्यक कारणांश है।

(ख) मान लीजिए कि हमें रवाकरण का कारन ढूंढना है। किस वजह से वस्तुएं रवा का रूप लेते हैं, इसकी वजह का पता लगाना है। इसके लिए हमें चन्द तरह (crystalline) पदार्थों की पूर्ववर्ती अवस्थाओं का पता लगाना होगा, यानी देखना होगा कि crystal बनने के पूर्व इन सबों की दशा क्या थी। खोज से पता चलेगा कि इन सबों की दशा एक बात में सामान्य थी - सभी तरल से ठोस हुए थे। चूंकि तरल से ठोस बनने की दशा सामान्य पूर्ववर्ती अवस्था थी, इसलिए यही रवाकरण का कारण निकल आती है।

इस विधि के अनेक गुण हैं
(1) निरीक्षण पर प्रधानतः आधारित होने के कारण

MARCH 2013

WK	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
9					1	2	3
10	4	5	6	7	8	9	10
11	11	12	13	14	15	16	17
12	18	19	20	21	22	23	24
13	25	26	27	28	29	30	31

इस विधि का क्षेत्र बहुत व्यापक या विस्तृत होता है।

(2) अन्वय - विधि अप्रात निष्कर्ष को यह अधिक सबल बना देती है।

(3) इस विधि का सबसे बड़ा गुण यह है कि यहाँ बहुकारणवाद का डर नहीं रहता है।

इस विधि के अवगुण —

(1) निरीक्षण पर प्रचलितः आधारित होने के कारण इस विधि में निरीक्षण की भूल हो आ सकती है निरीक्षण में घटना प्रकृति के हाथ में होती है जहाँ प्रकृति की घटना सूक्ष्म या गुप्त रहती है, वहीं अनिरीक्षण का डर बराबर रहता है। अनिरीक्षण के कारण ही पहले गन्दे पानी को मियादी बुखार का कारण माना जाता था। उस समय पानी के सूक्ष्म कि अणु का निरीक्षण नहीं होता था।

(2) हो सकता है कि अन्वय विधि के द्वारा जो हमें कारण और कार्य के रूप में मिलते हो, वे कारण और कार्य नहीं होकर एक ही घटना के दो सहकार्य हो। जैसे बादलों के टकराने से दो कार्य परिणाम होते हैं

(i) बिजली चमकती है।

(ii) कड़के की आवाज होती है।

ये दोनों (ii) C-effect है। इसलिए बिजली और आवाज को नियत पूर्ववर्ती और अनुवर्ती घटनायें समझ कर हम इन्हें कारण कार्य मान लें तो यह गलत हो जायगा।

MAY 2013
MO TU WE TH FR SA SU
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31 - -

(3) बहुकारणवाद से मह निधि गलत साबित की जाती है —
बहुकारणवाद के अनुसार एक ही कार्य की उत्पत्ति बहुत कारणों से होती है। जैसे — गाय तीन तरह के विष अलग-अलग पानी में घोलकर तीन व्यक्तियों को पिला देते हैं तो उनकी मृत्यु हो जाती है। यहाँ मृत्यु एक कार्य है जिसकी उत्पत्ति तीन कारणों से होती है। यदि हम पानी का रहना ही तीनों जगह देखकर अन्वय-विधि के आधार पर कह देते हैं कि मृत्यु का कारण पानी है तो वह उपयुक्त नहीं।
आधार पर हम कह सकते हैं इस उदाहरण के बहुकारणवाद अन्वय-विधि की सफलता में बाधक है। अन्वय विधि की इस दोष को Mill ने कहा है क्योंकि यह स्वाभाविक अपूर्णता विधि के स्वभाव में ही छिपा है।
(4) अन्वय विधि अधिक से अधिक यही बतला सकती है कि दो घटनाओं के बीच कारण-कार्य का सम्बन्ध होने की सम्भावना अत्याधिक है। इसलिए इसको प्रमाण की विधि नहीं बल्कि खोज की विधि कहते हैं क्योंकि कारण-कार्य सम्बन्ध को ढूंढने में यह विधि रास्ता तैयार कर देती है। इसलिए इसे खोज की विधि कहते हैं।

MARCH 2013
WK	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
9							
10					1	2	3
11	4	5	6	7	8	9	10
	11	12	13				